19 अगस्त, 2010 को 1800 बजे विज्ञान भवन, नई दिल्ली में सुविख्यात फोटोग्राफरों को 'लाइफटाइम अचीवमेंट' पुरस्कार वितरण समारोह में भारत के उपराष्ट्रपति का अभिभाषण

मुझे आज के समारोह में भाग लेकर और राष्ट्रीय फोटो पुरस्कार, 2010 प्रदान करते हुए अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

यह सूचना और प्रसारण मंत्रालय के फोटो प्रभाग की स्वर्ण जयंती भी है। फोटो प्रभाग ने हमारे दैनिक जीवन तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की घटनाओं को भावी पीढ़ियों के लिए अभिलिखित करने का जो कार्य दशकों से किया है उसके प्रलेखन, निर्माण और संरक्षण के अच्छे कार्य के लिए मैं उसे बधाई देता हूँ।

फोटो और फोटोग्राफी अब हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गए हैं। इन्हें बिना कोई सवाल किए स्वीकार किया जाता है और इनके संबंध में एकमात्र प्रश्न प्रौद्योगिकी और तकनीक के बारे पूछा जाता है। दोनों ही महत्वपूर्ण हैं; दोनो ही मानव मस्तिष्क का विकास करते हैं और इस पर प्रभाव छोड़ते हैं।

आधुनिक रूप में फोटोग्राफी 19वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में शुरू हुई परन्तु इससे भी ज्यादा पुरानी है मानव की चित्रों का भंडारण, प्रतिधारण और अभिलेख करने की अन्त:प्रेरणा। शायद इसका सबसे पहला उदाहरण मध्य प्रदेश की भीमबेटका पहाड़ की गुफाओं में पाया गया है। इनमें जानवरों और मनुष्यों की छवियों को चित्रित किया गया है और ये चित्र दस हज़ार वर्षों से भी ज्यादा पुराने हैं।

छवियों का चित्रण सभ्यता की प्रगति के साथ विकसित हुआ। अजंता की गुफाओं की चित्रकारी उत्कृष्टता का प्रतीक हैं। इसी प्रकार हमारे इतिहास के मध्यकालीन युग के लघुचित्र भी उत्कृष्टता को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार आधुनिक फोटोग्राफी की वंशावली उत्कृष्ट है।

चित्रकारी में अथवा फोटोग्राफी में चित्र खींचने और रिकार्ड करने के लिए तकनीक, कला तथा सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है। चित्रकार के पास चित्र को कागज या कैनवस पर उतारने से पूर्व ज़हन में चित्र गढ़ने के लिए काफी समय होता है।

फोटोग्राफर के लिए यह प्रक्रिया तत्क्षणिक होती है। उनके पास मन:स्थिति, रूप और माहौल को कैद करने की असामान्य, असाधारण, और अनूठी क्षमता युक्त नज़र होनी चाहिए। इस प्रकार, फोटोग्राफी मानवीय चेहरे पर भावों के सभी पहलुओं को अभिलिखित करती है और वह क्षणों को पकड़ कर रखती है। फोटोग्राफी का काम निर्जीव वस्तुओं अथवा अवसरों के साथ भी इसी प्रकार का होता है। व्यक्तियों और परिवारों द्वारा संजोयी हुई मधुर स्मृतियों के रूप में रखे गए फोटो अलबम इन क्षणों को स्मरण करने से जुड़े हुए भावनात्मक मूल्यों के साक्षी होते हैं।

जो बात व्यक्तियों के लिए सही है, वह समाज के लिए भी सही है। अभिलेख रखने का कार्य फोटो प्रभाग जैसी सरकारी संस्थाओं और व्यक्तियों, दोनों द्वारा किया जाता है और जिन व्यक्तियों को इस कला में चाव आने लगता है वे इसमें आगे बढ़ते जाते हैं और उत्कृष्टता हासिल करते हैं। प्रौद्योगिकी ने इस प्रक्रिया को सरल बना दिया है, किन्तु सूक्ष्म दृष्टि अभी भी एक दुर्लभ बात है, यह एक ऐसा कौशल है जो कुछेक प्रतिभावान व्यक्तियों में ही विकसित हो पाता है।

पुरस्कार समिति द्वारा जिन चार व्यक्तियों को चुना गया है उन्होंने अपने पेशेवर योगदानों के बूते अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। मैं पुरस्कार विजेताओं को बधाई देता हूँ। यहां श्रीमती होमई व्यारावाला का विशेष उल्लेख करना होगा जिन्होंने एक राष्ट्र के रूप में हमारे इतिहास के एक महत्वपूर्ण क्षण को देखा और इसे रिकार्ड किया।

मैं अम्बिका सोनी जी और सूचना और प्रसारण मंत्रालय का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने आज मुझे यहां पर आमंत्रित किया। मैं इस बात को लेकर आश्वस्त हूं कि फोटो प्रभाग एक राष्ट्र के रूप में हमारी प्रगति को रिकार्ड करने के निरन्तर बढ़ते हुए कार्य में योगदान करता रहेगा।

जय हिन्द।